

## श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 11: राम का शासन

23 September 2026

### 🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



महान् यज्ञों द्वारा अपने ही हृदय में भगवान् की आराधना करके, श्रीराम सम्पूर्ण पृथ्वी ब्राह्मणों एवं अपने पुरोहितों को दान कर देते हैं, अपने लिए केवल अपने आभूषण और दो वस्त्र रखकर — समस्त तृष्णा से मुक्त एक राजा का साक्षात् चित्र।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विङ्गडम् में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं एवं शिक्षाओं की एक श्रद्धापूर्ण यात्रा। नवम स्कन्ध का यह ग्यारहवाँ अध्याय भगवान् रामचन्द्र के पार्थिव शासन की कथा को उसके समापन तक ले जाता है, एक ऐसे राजा को दर्शाते हुए जो सब कुछ शासित करते हुए भी सब कुछ त्याग देते हैं, और एक ऐसे भगवान् को जो अपनी सबसे तुच्छ प्रजा की श्रद्धा की रक्षा के लिए अपने ही सुख का

त्याग कर देते हैं।

## अध्याय-परिचय

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 11 (एकादश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: भगवान् रामचन्द्र का शासन
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — सम्पूर्ण कथा सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक ऋषि एवं ऋषि-समुदाय को सुनाई गई
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: अयोध्या एवं कोसल राज्य; ऋषि वाल्मीकि का आश्रम
- केन्द्रीय विषय: भगवान् रामचन्द्र के यज्ञ एवं दान, सीता से उनका वियोग एवं कुश-लव का जन्म, उनका दिव्य धाम को प्रत्यागमन, और उनके शासन की महिमा
- मुख्य श्लोक-परास: नवम स्कन्ध, अध्याय 11, श्लोक 1-36
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

## यज्ञ और पृथ्वी का दान

शुकदेव ने कथा आगे बढ़ाई। अपने गुरु वसिष्ठ के मार्गदर्शन में, श्रीराम ने श्रेष्ठ सामग्री से किए गए महान् यज्ञों द्वारा अपने ही स्वरूप की, भगवान् विष्णु के रूप में जो समस्त देवता हैं, आराधना की। यज्ञों की समाप्ति पर उन्होंने पूर्व दिशा होता को, दक्षिण ब्रह्मा को, पश्चिम अध्वर्यु को, और उत्तर उद्गाता को दे दी; और मध्य में शेष बची सम्पूर्ण भूमि अपने गुरु को दे दी — क्योंकि, समस्त तृष्णा से मुक्त, उन्होंने माना कि ब्राह्मण ही सम्पूर्ण पृथ्वी का अधिकारी है।

आचार्याय ददौ शेषां यावती भूस्तदन्तरा ।

मन्यमान इदं कृत्स्नं ब्राह्मणोऽर्हति निःस्पृहः ॥ ३ ॥

*ācāryāya dadau śeṣāṁ yāvatī bhūṣ tad-antarā manyamāna idaṁ kṛtsnaṁ brāhmaṇo 'rhati niḥspṛhaḥ*

अर्थ: उन्होंने बीच में शेष बची समस्त भूमि अपने गुरु को दे दी, क्योंकि, तृष्णा से मुक्त होकर, उन्होंने माना कि ब्राह्मण ही इस सम्पूर्ण पृथ्वी का अधिकारी है। (नवम स्कन्ध, अध्याय 11, श्लोक 3)

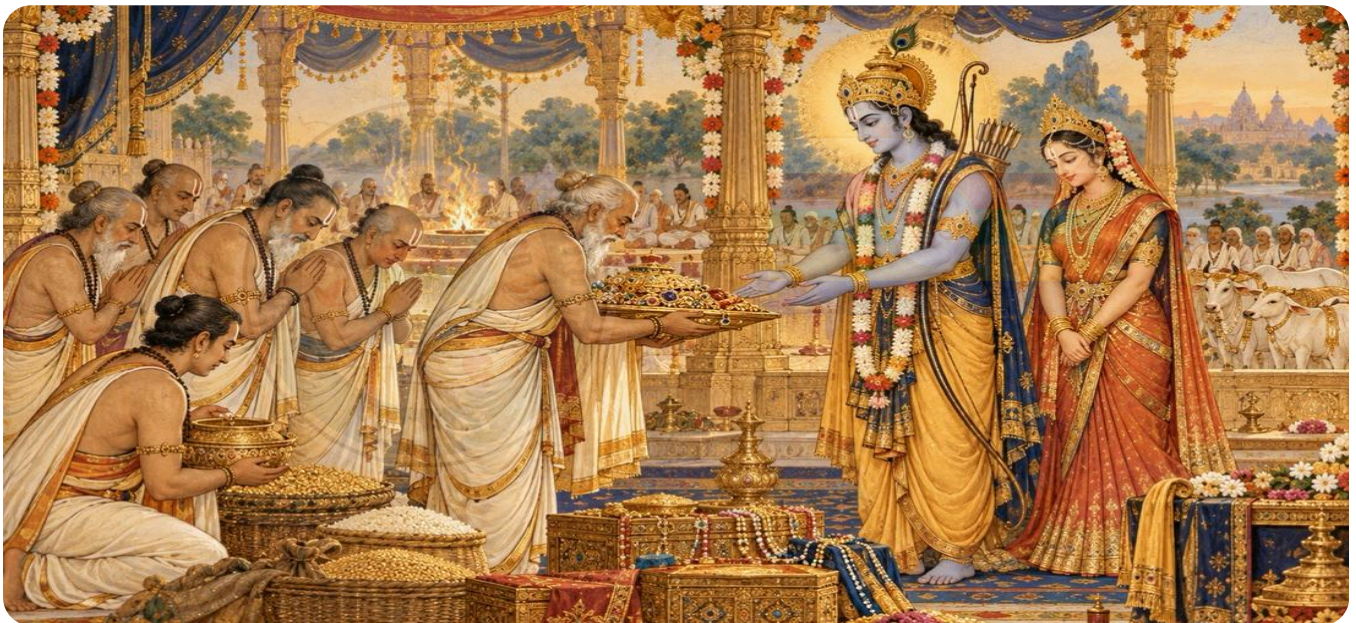
इस प्रकार श्रीराम के पास केवल उनके शरीर पर के आभूषण और दो वस्त्र रह गए, और सम्राज्ञी सीता के पास केवल विवाहित स्त्री का मंगलसूत्र, शेष सब आभूषण दान कर दिए गए। भगवान् के ब्राह्मण-प्रेम से प्रसन्न होकर, पुरोहितों ने सब कुछ उन्हें लौटा दिया, यह कहते हुए कि उस भगवान् द्वारा उनसे सचमुच कुछ भी नहीं रोका गया जो उनके अन्तर्हृदय में प्रवेश कर अपनी ज्योति से उनके अज्ञान का नाश करते हैं।

अप्रत्तं नस्त्वया किं नु भगवन् भुवनेश्वर ।

यन्नोऽन्तर्हृदयं विशय तमो हंसि स्वरोचिषा ॥ ६ ॥

*aprattam nas tvayā kiṁ nu bhagavan bhuvaneśvara yan no 'ntar-hṛdayam viśya tamo haṁsi  
sva-rociṣā*

अर्थ: हे भगवन्, हे विश्वेश्वर, आपके द्वारा हमें क्या नहीं दिया जा चुका, जो हमारे अन्तर्हृदय में प्रवेश कर अपनी ही ज्योति से हमारे अन्धकार का नाश करते हैं? (नवम स्कन्ध, अध्याय 11, श्लोक 6)



भगवान् के असीम दान एवं ब्राह्मण-प्रेम से द्रवित होकर, पुरोहित उनके समस्त उपहार प्रेमपूर्वक लौटा देते हैं, यह घोषित करते हुए कि उनके हृदय में वास करने वाले भगवान् ने उन्हें पहले ही सब कुछ दे दिया है (श्लोक 5-7)।

## सीता से वियोग

एक रात, अपनी प्रजा के मन को जानने के लिए वेश बदलकर नगर में घूमते हुए, श्रीराम ने एक पुरुष को अपनी पत्नी के विषय में कठोर बोलते सुना, जो उसे इसलिए वापस लेने से इनकार कर रहा था क्योंकि वह दूसरे के घर रह चुकी थी, और कह रहा था कि राम के समान पत्नी-प्रेमी राजा ही ऐसी सीता को रख सकता है। अपनी सबसे तुच्छ एवं संशयी प्रजा के भाव का भी मान रखने के लिए — क्योंकि संसार अनेक-मुख वाला एवं दुष्टोष्ण है — भगवान् ने सीता को भेज दिया; और वे ऋषि वाल्मीकि के आश्रम पहुँचीं। गर्भवती होने के कारण, समय आने पर उन्होंने जुड़वाँ पुत्रों को जन्म दिया जो कुश और लव नाम से प्रसिद्ध हुए, और ऋषि ने उनके संस्कार किए।

अन्तर्वत्यागते काले यमौ सा सुषुवे सुतौ ।

कुशो लव इति ख्यातौ तयोश्चक्रे क्रिया मुनिः ॥ ११ ॥

*antarvatny āgate kāle yamau sā suṣuve sutau kuśo lava iti khyātau tayoś cakre kriyā muniḥ*

अर्थ: गर्भवती होने पर, समय आने पर उन्होंने जुड़वाँ पुत्रों को जन्म दिया, जो कुश और लव नाम से प्रसिद्ध हुए; और ऋषि ने उनके संस्कार किए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 11, श्लोक 11)



ऋषि वाल्मीकि के शान्त आश्रम में शरण लेकर, सीता जुड़वाँ राजकुमारों कुश और लव को जन्म देती हैं, जिनका ऋषि प्रेमपूर्वक पालन-पोषण एवं शिक्षा करते हैं (श्लोक 10-11)।

शुकदेव ने भगवान् के भाइयों के पुत्रों के नाम भी बताए: अंगद और चित्रकेतु लक्ष्मण के पुत्र थे; तक्ष और पुष्कल भरत के पुत्र; और सुबाहु एवं श्रुतसेन शत्रुघ्न के पुत्र। दिग्विजय में भरत ने करोड़ों गन्धर्वों का वध किया और उनका धन श्रीराम को लाकर दिया; और शत्रुघ्न ने मधु-पुत्र लवण राक्षस का वध करके, मधुवन के स्थान पर मथुरा नगरी बसाई।

सुबाहुः श्रुतसेनश्च शत्रुघ्नस्य बभूवतुः ।

गन्धर्वान् कोटिशो जघ्ने भरतो विजये दिशाम् ॥ १३ ॥

तदीयं धनमानीय सर्वं राज्ञे न्यवेदयत् ।

शत्रुघ्नश्च मधोः पुत्रं लवणं नाम राक्षसम् ।

हत्वा मधुवने चक्रे मथुरां नाम वै पुरीम् ॥ १४ ॥

*subāhuḥ śrutasenaś ca śatrughnasya babhūvatuḥ gandharvān koṭīśo jaghne bharato vijaye diśām tadyaṁ dhanam ānīya sarvaṁ rājñe nyavedayat śatrughnaś ca madhoḥ putraṁ lavaṇaṁ nāma rākṣasam hatvā madhuvane cakre mathurām nāma vai purīm*

अर्थ: शत्रुघ्न के दो पुत्र हुए — सुबाहु और श्रुतसेन। दिशाओं को वश में करते हुए भरत ने अनगिनत गन्धर्व-सेनाओं पर विजय पाई और उनका धन राजा के समक्ष रख दिया; शत्रुघ्न ने अपनी ओर से नरभक्षी लवण, मधु के पुत्र, का वध किया, और उसी वन-भूमि पर वह नगरी बसाई जो आगे चलकर मथुरा कहलाई। (नवम स्कन्ध, अध्याय 11, श्लोक 13-14)



मधु-पुत्र लवण राक्षस का वध करके, वीर शत्रुघ्न मधुवन के स्थान पर पवित्र मथुरा नगरी बसाते हैं — जबकि भरत दिशाओं का जीता हुआ धन श्रीराम को लाकर देते हैं (श्लोक 13-14)।

अपने पुत्रों को ऋषि की देखरेख में सौंपकर और श्रीराम के चरणों में मन लगाकर, सीता — वियोग को अब और सहन न कर पाने के कारण — पृथ्वी के गर्भ में समा गई, जो उन्हें ग्रहण करने के लिए फट गई। यह सुनकर एवं उनके अनेक गुणों का स्मरण करके, सर्वशक्तिमान् भगवान्, यद्यपि उन्होंने विवेक से अपने शोक को वश में करने का प्रयत्न किया, उसे रोक न सके। भागवत कहता है कि स्त्री-पुरुष के बीच अत्यधिक आसक्ति बलवानों को भी भय एवं शोक देती है, और उन्हें और भी अधिक जिनका चित्त गृहस्थी में बँधा है।

## भगवान् का अपने धाम को प्रत्यागमन

तत्पश्चात्, तेरह हज़ार वर्षों तक अविच्छिन्न रूप से, भगवान् ने कठोर ब्रह्मचर्य में पवित्र अग्नि में आहुतियाँ दीं। तब, अपना स्मरण करने वालों के हृदयों में अपने चरणों की छाप — नवपल्लव के समान कोमल, जो कभी दण्डक वन के काँटों से बिंधे थे — छोड़कर, श्रीराम अपने स्व-प्रकाशित, दिव्य धाम को प्रस्थान कर गए।

स्मरतां हृदि विन्यस्य विद्धं दण्डककण्टकैः ।

स्वपादपल्लवं राम आत्मज्योतिरगात् ततः ॥ १९ ॥

*smaratām hṛdi vinyasya viddham daṇḍaka-kaṇṭakaiḥ sva-pāda-pallavam rāma ātma-jyotir agāt tataḥ*

अर्थ: उन्होंने अपने भक्तों के हृदयों में अपने कोमल चरणकमलों की स्मृति अंकित कर दी, जो कभी दण्डक वन में रहते हुए काँटों से आहत हुए थे, और इस प्रकार भगवान् अपने स्वयं-प्रकाशित धाम में प्रवेश कर गए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 11, श्लोक 19)



अपना पार्थिव कार्य पूर्ण करके, भगवान् रामचन्द्र अपने स्व-प्रकाशित दिव्य धाम को प्रस्थान करते हैं, अपना स्मरण करने वाले सभी के हृदयों में अपने चरणकमलों की छाप छोड़ते हुए (श्लोक 18-19)।

शुकदेव की इस कथा में एक गहरी धारा भी बहती है। भागवत सावधानीपूर्वक दर्शाता है कि भगवान् एवं उनके भक्त कभी व्यक्ति होना नहीं छोड़ते — न इस लोक में, न इससे परे। जब श्रीराम ने पूर्व में यज्ञों द्वारा अपने ही स्वरूप की आराधना की, तो यह इस बात का प्रमाण नहीं था कि जीव और भगवान् एक हैं; केवल वह एक परम पुरुष ही स्वयं की आराधना कर सकते हैं, जबकि जीव सदैव उनका पृथक् अंश ही रहता है (श्लोक 1)। इसी प्रकार उनका प्रत्यागमन किसी निराकार ज्योति में विलीन होना नहीं है: वह ब्रह्मज्योति, जो निराकारवादी साधक को आकर्षित करती है, केवल उनके दिव्य स्वरूप की बाह्य आभा मात्र है, और उससे परे वैकुण्ठ-लोक हैं, जहाँ केवल समर्पित हृदय ही प्रवेश पा सकता है (श्लोक 19)। अयोध्या का प्रत्येक नागरिक जिसने श्रीराम की सेवा की, उन्हें स्पर्श किया अथवा केवल उनका अनुगमन किया, उस शाश्वत धाम में भी उनकी सेवा करता रहा — अपने-आप में वही, उनसे प्रेम-सम्बन्ध में वही (श्लोक 22)। यही इस अध्याय का शान्त उत्तर है उस प्रत्येक दर्शन को, जो चित्र से व्यक्ति को मिटा देना चाहता है: भगवान् सदैव एक व्यक्ति ही रहते हैं, और उन्हें अर्पित प्रेम कभी सचमुच खोता नहीं — वह केवल घर लौट आता है।

राक्षसों का वध एवं समुद्र पर सेतु-बन्धन, शुकदेव ने विचार किया, रघुनाथ की कोई वास्तविक स्तुति नहीं, जिनकी महिमा अतुलनीय है और जिन्होंने देवताओं की प्रार्थना पर केवल प्रेममयी लीला के रूप में अपना रूप धारण किया। जिनकी निर्मल महिमा को ऋषि आज भी राजसभाओं में गाते हैं, जिनके चरणकमलों को इन्द्र एवं कुबेर के मुकुट स्पर्श करते हैं — वही शुकदेव की शरण थे। कोसल के जिन सब लोगों ने उन्हें स्पर्श किया, देखा, उनके पास बैठे या केवल उनका अनुगमन किया, वे वह गति पाए जो योगी पाते हैं; और जो कोई बार-बार सुनकर श्रीराम की कथा को हृदय में धारण करता है, और अहिंसा एवं कोमलता के व्रत पर स्थिर रहता है, वह कर्म के बन्धनों से मुक्त हो जाता है।

पुरुषो रामचरितं श्रवणैरुपधारयन् ।

आनुशंस्यपरो राजन् कर्मबन्धैर्विमुच्यते ॥ २३ ॥

*puruṣo rāma-caritaṁ śravaṇair upadhārayan ānūśaṁsya-paro rājan karma-bandhair vimucyate*

अर्थ: हे राजन्, जो मनुष्य श्रीराम के चरित्र को कान से निरन्तर श्रवण कर आत्मसात् करता है और करुणा-अहिंसा में निरत रहता है, वह कर्म के बन्धन से मुक्त हो जाता है। (नवम स्कन्ध, अध्याय 11, श्लोक 23)

## राम के शासन की महिमा

तब राजा परीक्षित ने पूछा कि भगवान् ने अपने भाइयों के प्रति, जो उनके ही अंश थे, कैसा आचरण किया, और उनके भाइयों एवं प्रजा ने उनके प्रति कैसा व्यवहार किया। शुकदेव ने उत्तर दिया कि श्रीराम ने अपने भाइयों को दिशाओं के विजय का भार सौंपा, जबकि वे स्वयं अपने सेवकों सहित नगर में विचरण करते रहे, अपनी प्रजा को दर्शन देते हुए।

श्रीबादरायणिरुवाच

अथादिशद् दिग्विजये भ्रातृन्त्रिभुवनेश्वरः ।

आत्मानं दर्शयन् स्वानां पुरीमैक्षत सानुगः ॥ २५ ॥

*śrī-bādarāyaṇir uvāca athādiśad dig-vijaye bhrātṛṁs tri-bhuvaneśvaraḥ ātmānaṁ darśayan svānāṁ purīm aikṣata sānugaḥ*

अर्थ: शुकदेव ने कहा: तब तीनों लोकों के स्वामी ने अपने भाइयों को दिशाओं की विजय का भार सौंपा, और, अपने लोगों को दर्शन देते हुए, अपने सेवकों सहित नगर का अवलोकन किया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 11, श्लोक 25)

अयोध्या, जिसकी सड़कें सुगन्धित जल से सिंचित थीं, जिसके प्रासाद स्वर्ण-गुम्बदों से मण्डित एवं ध्वजाओं, तोरणों, दर्पणों एवं पुष्पों से उज्ज्वल थे, अपने लौटे हुए स्वामी को देखकर मानो हर्षित हो उठी। नागरिकों ने पूजा-सामग्री सहित उनका स्वागत किया और उन्हें आशीर्वाद दिया, प्रार्थना करते हुए, “हे भगवन्, इस पृथ्वी की रक्षा करें, जिसे आपने स्वयं कभी उठाया था।” अपने गृह-कार्य छोड़कर, स्त्री-पुरुष उन्हें देखने अपने भवनों की छतों पर चढ़ गए और कमलनयन भगवान् पर पुष्प बरसाए, उनके नेत्र कभी तृप्त न हुए। अपने पूर्वजों के प्रासाद में, जो हर प्रकार के धन से समृद्ध एवं मूँग, मरकत एवं स्फटिक से अलंकृत था, भगवान् — आत्मा में रमण करने वाले ज्ञानियों में श्रेष्ठ — अपनी प्रिय सीता के साथ आनन्दपूर्वक रहे।

तस्मिन्स भगवान् रामः स्निग्धया प्रिययेष्टया ।

रेमे स्वारामधीराणामृषभः सीतया किल ॥ ३५ ॥

*tasmin sa bhagavān rāmaḥ snigdhayā priyayeṣṭayā reme svārāma-dhīrāṇām ṛṣabhaḥ sītayā kila*

अर्थ: उस प्रासाद में यशस्वी भगवान् राम — आत्मा में रमण करने वाले आत्माराम धीरजनों में श्रेष्ठ — अपनी स्नेहमयी एवं प्रिय सीता के साथ आनन्दपूर्वक रहे, ऐसा कहा जाता है। (नवम स्कन्ध, अध्याय 11, श्लोक 35)



अयोध्या अपने लौटे हुए स्वामी को देखकर हर्षित होती है: उसके स्वर्ण-गुम्बद एवं तोरण चमकते हैं, और नागरिक अपनी छतों से श्रीराम पर पुष्प बरसाते हैं जब वे अपने लोगों के बीच विचरण करते हैं (श्लोक 25-30)।

और भगवान्, जिनके चरणों का ज्ञानी ध्यान करते हैं, प्रत्येक ऋतु के अनुरूप सुखों का अनेक वर्षों तक उपभोग करते रहे, कभी धर्म के सिद्धान्तों को तनिक भी न मोड़ते हुए — क्योंकि उन्होंने अपने गृह-कर्तव्यों का पालन एक उदाहरण के रूप में, संसार को शिक्षा देने हेतु किया।

## इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. सबसे बड़ा राजा वही है जो तृष्णा से मुक्त हो। सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतकर एवं शासित करके, श्रीराम उसे ब्राह्मणों को दान कर देते हैं, केवल दो वस्त्र रखकर। सच्चा राजत्व इससे नहीं मापा जाता कि कोई कितना रखता है, बल्कि इससे कि वह कितना मुक्त भाव से त्याग सकता है (श्लोक 3-4)।
2. भगवान् सबसे तुच्छ स्वर का भी मान रखते हैं। एक संशयी प्रजा के भाव का मान रखने के लिए, भगवान् एक अपार व्यक्तिगत शोक सहते हैं। अपनी प्रजा की श्रद्धा के प्रति उनका ध्यान उनके अपने सुख से ऊपर रखा गया है (श्लोक 8-10)।
3. भगवान् का प्रेम भी हमारी समझ से परे है। सीता के वियोग में राम का शोक सांसारिक प्रेम की व्यग्र आसक्ति नहीं था, अपितु दिव्य स्नेह की पूर्णता था; वहीं यही प्रसंग यह भी चेतावनी देता है कि साधारण जीवों के लिए स्त्री-पुरुष के बीच आकर्षण भय एवं बन्धन का वास्तविक कारण बना रहता है, जिसे ब्रह्मा एवं शिव जैसे महान् व्यक्तित्व भी अनुभव करते हैं, और गृहस्थी में लीन लोग तो और भी अधिक (श्लोक 16-17)।
4. भगवान् का अवतार प्रेममयी लीला है, आवश्यकता नहीं। शुकदेव कहते हैं कि समुद्र-सेतु एवं राक्षसों का वध भगवान् की महिमा का कोई वास्तविक माप नहीं; उन्होंने केवल लीला के रूप में, देवताओं की प्रार्थना पर कार्य किया, उनकी सच्ची महानता समस्त कर्मों से परे है (श्लोक 20-21)।

5. राम की कथा सुनना हृदय को मुक्त करता है। जो कोई श्रीराम की कथा को हृदय में धारण करता है और करुणा एवं अहिंसा को पोषित करता है, वह कर्म के बन्धनों से मुक्त हो जाता है — यह अध्याय द्वारा प्रस्तुत सबसे सरल एवं सुनिश्चित मार्ग है (श्लोक 22-23)।

## एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

यह अध्याय हमें अपनी शक्ति के शिखर पर भगवान् को बार-बार त्यागते हुए दिखाता है। वे सम्पूर्ण पृथ्वी दान कर देते हैं और कुछ नहीं रखते; वे अपनी सबसे तुच्छ प्रजा की मनःशान्ति के लिए अपना सुख समर्पित कर देते हैं; और यद्यपि सीता का वियोग उनके हृदय को भी बींध देता है, वे उसे सहते हुए भी अपनी प्रजा की सेवा एवं धर्म का सम्मान करते रहते हैं। एक ऐसे भगवान् में एक विलक्षण विनम्रता है जो तीनों लोकों पर शासन करते हुए भी एक सुशासक की मर्यादाएँ स्वीकार करते हैं, जो दिव्य वराह रूप में ब्रह्माण्ड को उठाते हुए भी अपने नागरिकों को हाथ जोड़कर उन्हें आशीर्वाद देने देते हैं। शुकदेव मृदुता से हमारे विस्मय को चमत्कारी कर्मों से — सेतु, बाण, सेनाएँ — हटाकर उस भगवान् की शान्त महिमा की ओर मोड़ते हैं जो केवल प्रेमवश कार्य करते हैं, और जो अपने पदचिह्न समुद्र पर नहीं बल्कि अपना स्मरण करने वालों के हृदयों में छोड़ते हैं। और अध्याय के अन्त की प्रतिज्ञा अद्भुत रूप से सुलभ है: हमें सेतु बाँधने या युद्ध जीतने की आवश्यकता नहीं; हमें केवल उनकी कथा को कोमलता एवं करुणा से हृदय में धारण करना है, और कर्म के बन्धन ढीले पड़ने लगते हैं। राम का स्मरण करना, उनके लिए प्रत्येक प्राणी के प्रति कोमल होना — यही, भागवत हमें बताता है, स्वयं घर लौटने का मार्ग है।

## एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, श्रीराम के शासन की भावना में, अध्याय द्वारा प्रशंसित दो गुणों का अभ्यास करें: स्मरण एवं अहिंसा। भगवान् की कथा का एक अंश सुनने या पढ़ने के लिए कुछ मिनट अलग रखें, और उनके नाम को मृदुता से अपने अधरों पर रहने दें — “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” फिर उस स्मरण को करुणा के रूप में अपने दिन में ले जाएँ: किसी अन्य प्राणी के प्रति कोमलता का एक छोटा कर्म चुनें — एक दयालु शब्द, एक क्षमा किया अपमान, एक रोकी गई हानि — उसे उस भगवान् को अर्पित करते हुए जो अपनी कृपा से अपराधियों की भस्म तक को मुक्त कर देते हैं। जैसे राम ने सम्पूर्ण पृथ्वी दान कर दी और केवल प्रेम रखा, आज एक वस्तु को छोड़ दें जिससे आप अति दृढ़ता से चिपके हैं, और उसे, और स्वयं को, उनके चरणकमलों में रख दें।

## उपसंहार

नवम स्कन्ध का ग्यारहवाँ अध्याय भगवान् रामचन्द्र के शासन को उसके समापन तक लाता है, और साथ ही एक उज्ज्वल सत्य को भी: सच्ची महानता इससे मापी जाती है कि क्या त्यागा गया, न कि इससे कि क्या रखा गया। श्रीराम सम्पूर्ण पृथ्वी दान कर देते हैं, अपनी प्रजा की श्रद्धा हेतु सीता को खोने का शोक सहते हैं, और अन्ततः अपने शाश्वत धाम को लौट जाते हैं — प्रत्येक त्याग के बीच भी सम्पूर्णतः एक व्यक्ति बने रहते हुए, अपने प्रेमियों के लिए सम्पूर्णतः उपस्थित रहते हुए। शुकदेव हमें एक ऐसी प्रतिज्ञा के साथ छोड़ते हैं जो जितनी कोमल है उतनी ही सुनिश्चित: श्रीराम की कथा को करुणा एवं अहिंसा से हृदय में धारण करना स्वयं कर्म के बन्धनों से मुक्त होना है। हम उनका नाम हृदय में धारण करें, और उनके लिए कोमल बनें।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

## सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण, नवम स्कन्ध, एकादश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञम • विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं संस्तुति के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: [kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-11-lord-ramachandra-rules-the-world-hi.html](http://kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-11-lord-ramachandra-rules-the-world-hi.html)

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट